REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के काव्य में युग–यथार्थ

प्रा. सविता शिवलिंग मेनकुदळे
हिंदी विभाग , छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा.

प्रस्तावना –

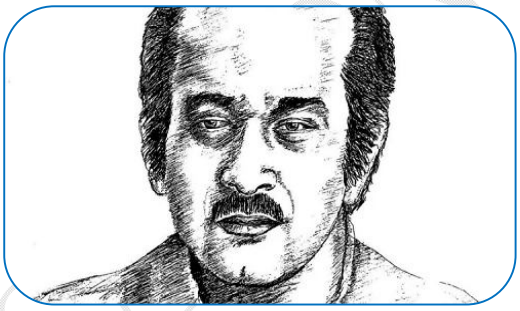

नई कविता जिन कवियों के सतत प्रयास और स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व की छाँह में पली बढी और ऊँचाइयों तक पहुँची है, उनमें सर्वेश्वर जी का नाम प्रतिनिधि कवि के रूप में लिया जाता है। वे सतत जागरूक और पिछली मान्यताओं को अस्वीकार करके आगे बढने वाले कवि है। उनकी हर रचना अपनी सहजनिष्ठा, भविष्यधर्मी चेतना और रोमानियत को साथ लेकर यथार्थबोध से जुडी है। युगविशेष की काव्यधारा से जुडे हुए कवि को काव्य में युगीन संदर्भों के साथ–साथ उस काव्य परंपरा की विशेषताएँ भी व्यक्त होती है। सर्वेश्वर नई कविता के जाने–पहचाने और चर्चित कवि रहे हैं। उस काव्य की कतिपय विशेषताएँ उनके काव्य में व्यक्त ही नहीं, अनुस्यूत भी हुई है। गिरिजाकुमार माथुर ने सर्वेश्वर जी को 'नवरूमानी' कवि माना है। 'कविताएँ–1' में सर्वेश्वर के 'काठ की घंटियाँ' और 'बाँस का पुल' संग्रहों की रचनाएँ तथा 'कविताएँ–2' में 'एक सूनी नाव' और 'गर्म हवाएँ' की रचनाएँ संकलित हैं। इनसे सर्वेश्वर की काव्य–यात्रा के विविध पडावों और काव्यचेतना के विविध आयामों को जाना–पहचाना जाता और परखा जा सकता है। यथार्थ के प्रति बदलती दृष्टि, पूर्ववर्ती काव्य से अलग पहचान, यथार्थोन्मुखी आदर्श, निःसत्व भावावेश, व्यक्ति और युग जीवन का गहरा लगाव, नए मूल्यों का अन्वेषण आदि नई कविता के लक्षण सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के काव्य में भली–भाँति पाए जाते हैं। नई कविता के वैचारिक पक्ष को भावुकता और सजल स्निग्धता से समर्पित करके प्रभावी शिल्प में ढालने वाले कवियों में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का नाम अनुपेक्षणीय है।

सर्वेश्वर जी के काव्य में युग–यथार्थ –

सर्वेश्वर परिवेश के बहुआयामी यथार्थ के अनुभवों के माध्यम से व्यक्तित्व की सार्थकता खोजते हैं। व्यक्तित्व का यह अन्वेषण कवि को व्यष्टि से समष्टि तक ले जाता है, जिससे कवि का व्यक्तित्व अधिक उदार और व्यापक हो जाता है। 'काठ की घंटियाँ', 'आत्मसाक्षात्कार', 'नए वर्ष पर' और 'बनजारे का गीत' में यह व्यक्तित्व व्यापक एवं उदात्त भावभूमि से संयुक्त होकर सामाजिक चेतना से संवेदित और संघटित हुआ है। ग्राम्य प्रकृति के मोहक चित्र, समसामयिकता का दायित्व और जनजीवन से गहरे लगाव को व्यक्त करने में सर्वेश्वर नई कविता वादियों में सबसे आगे हैं। 'सावन का गीत,' 'झूले का गीत' 'चरवाहों का युगलगाना', 'आँधी पानी आया', 'सुबह हुई', और 'गाँव शाम का सफर' में लोक संपृक्ति और ग्राम्य प्रकृति के मोहक चित्र अंकित हुए हैं। लोकगीतों की धुनों के साथ सर्वेश्वर ने लोक–भाषा के शब्दों जैसे– निबौली, ओठंगी, उतानी, करेजवा, कजरी, फुलगेंदवा, बिछिया, झूमर आदि का सुंदर और सार्थक प्रयोग किया है। ग्राम्य प्रकृति और लोक–जीवन से गहरा लगाव सर्वेश्वर जी की कविताओं में अधिक दीप्त होकर आया है। दृश्य स्पर्श और गंध के बिंबों तथा रंग–बोध का अनूठा संसार खुलने लगता है। सर्वेश्वर ने मानवीय व्यापारों को प्रकृति के माध्यम से सुंदर ढंग से व्यक्त किया है –

''अगहनी मुरैठा बाँधे शिशिर का चरवाहा
ठाकुर छोर की कच्ची दीवार से
पीठ टिकाए बैठा धूप सेंक रहा है।

सुबह दमकते सोने से रंगवाली
एक अल्हड किशोरी
तूली के रंग की साडी पहने
रंग–बिरंगी मूंज की डलिया बुन रही है।''1

वस्तु और शिल्प का यह सामंजस्य सर्वेश्वर की उपलब्धि है। डॉ. गोविंद रजनीश लिखते हैं, ''सर्वेश्वर की कविता में अंतर्मुखता और बहिर्मुखता, आत्मीयता और अनात्मीयता, ग्राम्य और नगरीय चेतना, आत्मपरकता और वस्तुपरकता, आत्मचेतना और सामाजिक चेतना कहीं टकराती और कहीं जुडती हुई चलती है। कवि चेतना में ग्राम्य–जीवन कहीं गहरे में धँसा हुआ है, इसीलिए ग्राम्य प्रकृति और जीवन के चित्र सर्वेश्वर के काव्य में काफी प्रभावी है।''2

संस्कृति के बदलते हुए मूल्यों में मानवतावाद का उदय हुआ तथा उसके सम्मुख छोटी–छोटी बातों को दबा दिया गया। कवि मानव विवेक की स्वतंत्रता को मानव प्रगति की प्राथमिक आवश्यकता मानता है। उसके मतानुसार वादों की एकांगी दृष्टि मानव प्रगति का भ्रम उत्पन्न कर सकती है, उसे संभव नहीं बना सकती। उसका सारा जोर मानव विवेक पर है। मानव विवेक की हत्या करके मानव मुक्ति की घोषणा करना कवि की दृष्टि में एक ढोंग के भाव सर्वेश्वर में पाए जाते हैं। उनकी कविता में प्रकृति मानव को आशा और कर्मठता का संदेश देती है। थकी शीतल हवा का यह संदेश भावना प्रधान है।

''पराजय ने मुझे शीतल किया।
और हर भटकाव ने गीत दिया।
नहीं कोई था इसी से सब हो गए मेरे।''3

कवि परिवर्तन की दिशाएँ खोजने में जुटा रहता है। कवि की भावुकता ने, उसके नए ज्ञान ने एक ऐसा वातावरण तैयार किया है कि आज प्रत्येक व्यक्ति सजग है, पर शासन और धन की ताकत के सामने उसकी आवाज डूब गई है।

सर्वेश्वर युगजीवन से लगाव को गहन अनुभव के स्तर पर इस तरह ग्रहण करते हैं कि उनकी कविताओं में व्यक्ति और युगजीवन एक दूसरे से पूरी तरह जुड जाते हैं। सर्वेश्वर नए मूल्यों की खोज में आधुनिकता को साथ लेकर चले हैं। युग की समस्याओं के प्रति जागरूक रहकर वे समसामयिकता को व्यंजित करते हैं।

सन 1960 के बाद हिंदी कविता में युगयथार्थ और राजनीतिक विसंगतियों से सीधी टकराहट व्यक्त हो रही थी। इस समय देश की अव्यवस्था, प्रशासन की विफलता, लंबे–चौडे नारों, योजनाओं और वक्तव्यों का खोखलापन आदि का सर्वेश्वर ने एहसास किया था –

''ढाल की लय धीमी होती जा रही है
धीरे–धीरे एक क्रांति–यात्रा
शव–यात्रा में बदल रही है
सडांध फैल रही है –
नक्शे पर देश के
और आँखों में प्यार के
सीमांत धुँधले पडते जा रहे हैं
और हम चूहों से देख रहे हैं।''4

सर्वेश्वर जी की विवशता का यह एहसास साठोत्तरी कविता के जुझारूपन से भिन्न है। सर्वेश्वर को राजनीतिक विसंगतियों का तीखा एहसास था। सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों पर सर्वेश्वर के व्यंग्य काफी तीखे और मारक हैं। सर्वेश्वर की काव्य–यात्रा में कुछ ऐसे बिंदु हैं जो बार–बार कवि चेतना को उत्प्रेरित करते हैं।

निष्कर्ष –

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना केवल एक व्यक्ति और कवि नहीं है, अपितु ऊँचे वर्गद्वारा होने वाले अन्याय, अत्याचार के प्रति एक सशक्त विद्रोह है। उनकी कविता जनसामान्य के दुःख–दर्द और पीडा तथा छटपटाहट की कविता है। नई कविता के वैचारिक पक्ष को भावुकता और सजल स्निग्धता से समर्पित करके प्रभावी शिल्प में ढालने वाले कवियों में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का नाम उल्लेखनीय है। वे हमेशा आज की बेहद पीसी हुई संघर्षपूर्ण, कटु और कीचड में बिलबिलाती जिंदगी के सुंदरतम अर्थ खोजने में रत रहे हैं। 'बाँस का पुल' में आत्मचेतनापरक और युग–विसंगतियों और विपर्ययों पर व्यंग्यभरी कविताएँ भी हैं। नई सभ्यता और बुद्धिजीवियों के बनावटीपन, दोगलेपन, धूर्तताओं और नीचताओं पर कवि गहरी चोट करता हुआ चलता है। 'बाँस का पुल' की 'यही कहीं कच्ची सडक थी' में ग्राम्य जीवन और औद्योगिक सभ्यता के बीच की खाई और अन्तर्विरोध पूरी तरह व्यक्त हुए है। ग्राम्य जीवन भी यथार्थ के धरातल पर चित्रित हुआ है। पहचान की छटपटाहट, प्रकृति के माध्यम से नए सांग रूपकों, प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग, विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य, युग–यथार्थ से गहरा लगाव और ग्राम्य–प्रकृति के मोहक चित्र सर्वेश्वर के काव्य की ऐसी विशेषताएँ हैं जो कवि के रचनात्मक अनुभव को वैशिष्टय प्रदान करती है और नई कविता में कवि की अलग पहचान बनाती है।

संदर्भ –

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना – कविताएँ–एक–बाँस का पुल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1976, पृ. 105
2. डॉ. गोविंद रजनीश – समकालीन हिंदी कविता की संवेदना, साहित्यागार, जयपुर, प्रथम संस्करण – 1992, पृ. 98
3. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना – कविताएँ–एक–काठ की घंटियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1976, पृ. 60
4. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना – कविताएँ–एक–काठ की घंटियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1976, पृ. 135

प्रा. सविता शिवलिंग मेनकुदळे
हिंदी विभाग , छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा.

LBP PUBLICATION